गुणवत्तायुक्त बीज से फसलों की पैदावार में 20 से 25 फीसदी वृद्धि

वैज्ञानिक विधि से खेती के साथ गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन में सहयोग करें किसान

कानपुर, 9 जनवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र थरियांव में आज भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित परियोजना पोषण फसलों पर उन्नत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र के अंतर्गत रबी फसलों एवं सब्जियों के गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन विषय पर एक दिवसीय कृषक-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डॉ एके सिंह ने बताया कि प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों को फसल और सब्जियों के उन्नत बीज उत्पादन तकनीकी तथा उनके मूल्य संवर्धन के विषय में जानकारी प्रदान करना था जिसके माध्यम से किसान अधिक आय अर्जित कर सके। डॉ ए के सिंह ने बताया कि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से खेती करके गुणवत्ता युक्त बीज का उत्पादन कर अन्य किसानों की भी मदद कर सकते हैं और उसी बीज का उपयोग अपने खेत में करके अपनी कृषि लागत को भी कम कर सकते हैं। प्रो. सी एल मौर्य ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के नेतृत्व में कृषि वैज्ञानिक मौसम अनुकूल नई नई प्रजातियों को विकसित कर कृषकों तक पहुंचा रहे हैं। इतना ही नहीं विश्वविद्यालय द्वारा उत्पादित बीजों को किसानों को उपलब्ध भी कराया जा रहा है। डॉ मौर्य ने अवगत कराया कि संस्कार, संस्कृति एवं नीतियों के बेहतर संगम से विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। उन्होंने बताया कि गुणवत्ता युक्त बीज फसल उत्पादन हेतु विशेष होता है। गुणवत्ता परक बीज का उपयोग करके फसल की पैदावार को 20 से 25 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है। अतः प्रत्येक किसान को गुणवत्ता युक्त बीजों का ही प्रयोग करना चाहिए। वैज्ञानिक डॉ राजीव सिंह ने सब्जियों के बीज उत्पादन और पोषक वाटिका के विषय में जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि हम अपने आसपास की खाली जगहों पर या घर की छतों पर कीटनाशक मुक्त सब्जियों का सफलतापूर्वक उत्पादन कर सकते हैं। जिससे हमें अपने दैनिक उपयोग के लिए शुद्ध एवं रसायन रहित सब्जी प्राप्त हो सकती है। डॉ खोमवीर सिंह ने गेहूं की उन्नत बीज उत्पादन के लिए प्रजाति के चयन के साथ-साथ उच्च अनुवांशिक शुद्धता युक्त बीज उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तृत जानकारी दी। गृह वैज्ञानिक डॉक्टर साधना वैश्य ने बताया कि मूल्य संवर्धन के द्वारा किसान अपनी आमदनी दोगुनी कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि जो भी फल सब्जी विक्रय की दृष्टि से बेकार होती है उसको मूल्य संवर्धन प्रक्रिया के द्वारा मूल्य संवर्धित उत्पाद जैसे पाउडर, जूस, जैम, जेली इत्यादि रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। वैज्ञानिक डॉ जितेंद्र सिंह ने अपने व्याख्यान में बताया कि उच्च गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन के लिए जिस भूमि का चुनाव कर रहे हैं वह पुरानी फसल के बीजों से रहित होना चाहिए। कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर जगदीश सिंह ने रबी फसलों में लगने वाले कीट बीमारियों के लक्षण और उनके जैविक प्रबंधन पर चर्चा की। डॉ देवेंद्र स्वरूप ने अपने व्याख्यान में गुणवत्ता युक्त चारा फसलों के उत्पादन पर जानकारी दी। डॉ नौशाद आलम ने किसानों को जैविक खाद जैसे गोबर की खाद, हरी खाद, वर्मी कंपोस्ट आदि के बारे में जानकारी दी। इस दौरान डा. जितेंद्र सिंह, डॉ साधना वैश्य, डॉ देवेंद्र स्वरूप आदि मौजूद रहे।

कार्यक्रम में जानकारी देते डाक्टर।

■ एक दिवसीय कृषक-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम

सफेद दाग का स

लोकनायक भारत
सत्यनिष्ठ, उत्कृष्ट
नई दिल्ली संस्करण वर्ष-01, अंक - 68
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
R.e.g. Licence No.- F2 (L-1) Press-2021
सोमवार, 10 जनवरी 2022 | पृष्ठ 12 | मूल्य 3 रु.
epaper→ www.loknayakbharat.com

एक दिवसीय कृषक-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम संपन्न

लोकनायक भारत ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र थरियांव में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित परियोजना पोषण फसलों पर उन्नत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र के अंतर्गत रबी फसलों एवं सब्जियों के गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन विषय पर एक दिवसीय कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ एके सिंह ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया। प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों को फसल और सब्जियों के उन्नत बीज उत्पादन तकनीकी तथा उनके मूल्य संवर्धन के विषय में जानकारी प्रदान करना था जिसके

माध्यम से किसान अधिक आय अर्जित कर सके। इस संवाद कार्यक्रम में संयोजक प्रोफेसर सी एल मौर्य ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के नेतृत्व में कृषि वैज्ञानिक मौसम अनुकूल नई-नई प्रजातियों को विकसित कर कृषकों तक पहुंचा रहे हैं इतना ही नहीं विश्वविद्यालय द्वारा उत्पादित बीजों को किसानों को उपलब्ध भी कराया जा रहा है। गुणवत्ता परक बीज का उपयोग करके फसल की पैदावार को 20 से 25% तक बढ़ाया जा सकता है। अतः प्रत्येक किसान को गुणवत्ता युक्त बीजों का ही प्रयोग करना चाहिए। वैज्ञानिक डॉ राजीव सिंह ने सब्जियों के बीज उत्पादन और पोषक वाटिका के विषय में जानकारी प्रदान की। डॉ खोमवीर सिंह ने गेहूं की उन्नत बीज उत्पादन के लिए प्रजाति के चयन के साथ-साथ उच्च अनुवांशिक शुद्धता युक्त बीज उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तृत जानकारी दी। गृह वैज्ञानिक डॉक्टर साधना वैश्य ने बताया कि मूल्य संवर्धन के द्वारा किसान अपनी आमदनी दोगुनी कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि जो भी फल सब्जी विक्रय की दृष्टि से बेकार होती है उसको मूल्य संवर्धन प्रक्रिया के द्वारा मूल्य संवर्धित उत्पाद जैसे पाउडर, जूस, जैम, जेली इत्यादि रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। वैज्ञानिक डॉ जितेंद्र सिंह ने अपने व्याख्यान में बताया कि उच्च गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन के लिए जिस भूमि का चुनाव कर रहे हैं वह पुरानी फसल के बीजों से रहित होना चाहिए। कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर जगदीश सिंह ने रबी फसलों में लगने वाले कीट बीमारियों के लक्षण और उनके जैविक प्रबंधन पर चर्चा की। डॉ देवेंद्र स्वरूप ने अपने व्याख्यान में गुणवत्ता युक्त चारा फसलों के उत्पादन पर जानकारी दी। डॉ नौशाद आलम ने किसानों को जैविक खाद जैसे गोबर की खाद, हरी खाद, वर्मी कंपोस्ट आदि के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर जितेंद्र सिंह ने किया। अतिथियों का स्वागत डॉक्टर साधना वैश्य ने किया।

वर्ष 16 अंक 10 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, सोमवार 10 जनवरी 2022

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी, एटा, हरदोई, उन्नाव, कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक नगर छाया

आप की आवाज़.....

एक दिवसीय कृषक-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम संपन्न

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र थरियांव में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित परियोजना पोषण फसलों पर उन्नत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र के अंतर्गत रबी फसलों एवं सब्जियों के गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन विषय पर एक दिवसीय कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ एके सिंह ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया। प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों को फसल और सब्जियों के उन्नत बीज उत्पादन तकनीकी तथा उनके मूल्य संवर्धन के विषय में जानकारी प्रदान करना था जिसके माध्यम से किसान अधिक आय अर्जित कर सके। डॉक्टर ए के सिंह ने बताया कि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से खेती करके गुणवत्ता युक्त बीज का उत्पादन कर अन्य किसानों की भी मदद कर सकते हैं। और उसी बीज का उपयोग अगले वर्ष करके अपनी कृषि लागत को भी कम कर सकते हैं। इस संवाद कार्यक्रम में संयोजक प्रोफेसर सी एल मौर्य ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के नेतृत्व में कृषि वैज्ञानिक मौसम अनुकूल नई नई प्रजातियों को विकसित कर कृषकों तक पहुंचा रहे हैं इतना ही नहीं विश्वविद्यालय द्वारा उत्पादित बीजों को किसानों को उपलब्ध भी कराया जा रहा है। डॉक्टर मौर्य ने अवगत कराया कि संस्कार,संस्कृति एवं नीतियों के बेहतर संगम से विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। उन्होंने बताया कि गुणवत्ता युक्त बीज फसल उत्पादन हेतु निवेश होता है गुणवत्ता परक बीज का उपयोग करके फसल की पैदावार को 20 से 25 प्रतिशत तक बढ़ाया जा सकता है। अतः प्रत्येक किसान को गुणवत्ता युक्त बीजों का ही प्रयोग करना चाहिए। वैज्ञानिक डॉ राजीव सिंह ने सब्जियों के बीज उत्पादन और पोषक वाटिका के विषय में जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि हम अपने आसपास की खाली जगहों पर या घर की छतों पर कीटनाशक मुक्त सब्जियों का सफलतापूर्वक उत्पादन कर सकते हैं जिससे हमें अपने दैनिक उपयोग के लिए शुद्ध एवं रसायन रहित सब्जी प्राप्त हो सकती है।डॉ सोमवीर सिंह ने गेहूं की उन्नत बीज उत्पादन के लिए प्रजाति के चयन के साथ-साथ उच्च अनुवांशिक शुद्धता युक्त बीज उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तृत जानकारी दी।गृह वैज्ञानिक डॉक्टर साधना वैश्य ने बताया कि मूल्य संवर्धन के द्वारा किसान अपनी आमदनी दोगुनी कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि जो भी फल सब्जी विक्रय की दृष्टि से बेकार होती है उसको मूल्य संवर्धन प्रक्रिया के द्वारा मूल्य संवर्धित उत्पाद जैसे पाउडर, जूस, जेम ,जेली इत्यादि रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। वैज्ञानिक डॉ जितेंद्र सिंह ने अपने व्याख्यान में बताया कि उच्च गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन के लिए जिस भूमि का चुनाव कर रहे हैं वह पुरानी फसल के बीजों से रहित होना चाहिए।कृषि वैज्ञानिक डॉक्टर जगदीश सिंह ने रबी फसलों में लगने वाले कीट बीमारियों के लक्षण और उनके जैविक प्रबंधन पर चर्चा की।डॉ देवेंद्र स्वरूप ने अपने व्याख्यान में गुणवत्ता युक्त चारा फसलों के उत्पादन पर जानकारी दी।डॉ नौशाद आलम ने किसानों को जैविक खाद जैसे गोबर की खाद, हरी खाद, वर्मी कंपोस्ट आदि के बारे में जानकारी दी।कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर जितेंद्र सिंह ने किया।अतिथियों का स्वागत डॉक्टर साधना वैश्य ने किया। जबकि धन्यवाद प्रस्ताव डॉ देवेंद्र स्वरूप ने किया।

Sign in to edit and save changes to this file.

लखनऊ संस्करण

दैनिक भास्कर

For epaper : www.dainikbhaskarup.com

12

एक दिवसीय कृषक-वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम सम्पन्न

भास्कर ब्यूरो

कानपुर। सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र थरियांव में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वित्त पोषित परियोजना पोषण फसलों पर उन्नत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केंद्र के अंतर्गत रबी फसलों एवं सब्जियों के गुणवत्ता युक्त बीज उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन विषय पर एक दिवसीय कृषक वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ एके सिंह ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत उद्घाटन किया। प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों को फसल और सब्जियों के उन्नत बीज उत्पादन तकनीकी तथा उनके मूल्य संवर्धन के विषय में जानकारी प्रदान करना था जिसके माध्यम से किसान अधिक आय अर्जित कर सके। इस संवाद कार्यक्रम में संयोजक प्रोफेसर सी एल मौर्य ने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर डीआर सिंह के नेतृत्व में कृषि वैज्ञानिक मौसम अनुकूल नई-नई प्रजातियों को विकसित कर कृषकों तक पहुंचा रहे हैं।इतना ही नहीं विश्वविद्यालय द्वारा उत्पादित बीजों को किसानों को उपलब्ध भी कराया जा रहा है। गुणवत्ता परक बीज का उपयोग करके फसल की पैदावार को 20 से 25% तक बढ़ाया जा सकता है। अतः प्रत्येक किसान को गुणवत्ता युक्त बीजों का ही प्रयोग करना चाहिए। वैज्ञानिक डॉ राजीव सिंह ने सब्जियों के बीज उत्पादन और पोषक वाटिका के विषय में जानकारी प्रदान की।डॉ सोमवीर सिंह ने गेहूं की उन्नत बीज उत्पादन के लिए प्रजाति के चयन के साथ-साथ उच्च अनुवांशिक शुद्धता युक्त बीज उत्पादन तकनीक के बारे में विस्तृत जानकारी दी।गृह वैज्ञानिक डॉक्टर साधना वैश्य ने बताया कि मूल्य संवर्धन के द्वारा किसान अपनी आमदनी दोगुनी कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि जो भी फल सब्जी विक्रय की दृष्टि से बेकार होती है उसको मूल्य संवर्धन प्रक्रिया के द्वारा मूल्य संवर्धित उत्पाद जैसे पाउडर, जूस, जेम ,जेली इत्यादि रूप में परिवर्तित किया जा सकता है।